ईश्वर से संवाद

राजीव जायसवाल

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Rajiv Jayaswal 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-457-4

Cover Design: Shivam Gaur
Typesetting: Sagar

First Edition: January 2026

आत्म कथ्य

बहुत से लोग पूछते हैं कि चार्टर्ड एकाउंटेंट जैसे नीरस प्रोफेशन में होकर कविता लेखन कैसे कर लेते हो. मेरा जवाब यही होता है कि सी.ए. मेरा व्यवसाय है और लेखन मेरा शौक । जीवन में बहुत से उतार-चढ़ाव आए । सोचता हूँ, अगर अपने मन के भावों को कविता का रूप ना दिया होता, तो जीवन के द्वंद्व, अंतर को झकझोर देते । मन का धरातल, रेगिस्तान में बदल जाता, अगर अंतर में कविता रूपी झरना ना बह रहा होता ।

छह भाई बहनों में सबसे बड़ा, दादी के दुलार, पिता के अनुशासन, माता के धीर गंभीर व्यक्तित्व के बीच एक बड़े परिवार में बचपन बीता । दिल्ली जैसी जगह पर एक बहुत बड़ा घर, एक बगीचा और बगीचे में मेहंदी, नीम, कनेर, इमली व यूकेलिप्टस के बड़े-बड़े पेड़ । बारिश के बाद पेड़ों पर चमकती पानी की बूँदें, आज भी मेरे जेहन में अंकित हैं ।

पहली कविता स्कूल में अपनी टीचर पर लिखी थी, समय के साथ-साथ उम्र बढ़ी, प्रेम का पौधा, अकुंरित हुआ, प्रणय कविताओं का जन्म हुआ । आध्यात्मिकता में रूचि प्रारंभ से ही थी, मेरे लिए परमात्मा कोई मूर्ति, अवतार, पीर, पैगंबर ना होकर एक सर्व व्यापक सत्ता रहा है । मेरी कविताएँ उसी प्रभु का गुण गान करती हैं । समाज की रूढ़ियों, अंधविश्वासों व सामाजिक समस्याओं का भी मेरी कविताओं में चित्रण हुआ है ।

फेसबुक जैसी सोशल साइट पर आकर मेरी काव्यात्मकता का विस्तार हुआ, सराहना व आलोचना दोनों मिलीं । बहुत सी कविताओं का सृजन फेस बुक पर ही हुआ । मेरी इस काव्य यात्रा में मेरी जीवन साथी वंदना का भी बहुत सहयोग रहा ।

राजीव जायसवाल

अनुक्रम

1. ध्यान सूत्र 1
2. ईश्वर से संवाद 2
3. ऐसा कैसे हो जाता है? 5
4. एक ओइम, एक ओंकार 7
5. एक बुद्ध था 9
6. ध्यान 11
7. नेति-नेति 13
8. राम 15
9. पुनिः पुनिः जन्मम् 17
10. मन तो बंधन है 20
11. ईश्वर से फरियाद 21
12. जागरण 24
13. हे कृष्ण 25
14. धन गुरु गोबिंद सिंह 27
15. निश्चय कर अपनी जीत करो 29
16. देखते रहो 32
17. ऐसे मत जी 34
18. तू ही तू 37
19. आरती 41
20. तेरा मन, मेरा मन 42
21. विस्मय 44

22. स्वप्न 46
23. आँख न खुल पाएगी 48
24. एक एक दिन को पकड़ लो.................................... 50
25. कहाँ जाऊँगा 52
26. सारा जीवन पढ़त गंवाया 54
27. मात पिता को मत बिसराना 56
28. उस क्यों भूला 59
29. अब जीने का मन करता है 61
30. कुछ नया सा हो.. 63
31. मैं तेरी गोद में हूँ.. 66
32. क्या पता 69
33. मैं कुछ भी न देख सकूँगा 72
34. मेरे दोस्त..74
35. लोग 77
36. सुख क्या है 80
37. मैं भी इन में से एक हूँ 82
38. मैं हिन्दु, तू मुसलमान 83
39. मजहब अगर न होता.. 84
40. गर्व से कहो 86
41. प्रहार.. 88
42. मन तुम भी अजीब हो 90
43. मेरी जीवन डायरी.. 91
44. कौन दिशा से आए हो..94
45. सुख दुख 97
46. लोग ही लोग 99

47. हरि ही 101
48. ऐसे मत मर जाना 103
49. हम क्या हैं 104
50. मेरे भीतर 106
51. प्राण मेरे 108
52. हैरानी 111
53. पीड... 113
54. कहाँ गए.. 115
55. मैं ही मैं... 117
56. प्रभु 119
57. दादी 121
58. सब एक से हैं.. 124
59. बचपन 126
60. क्या करूँ 128
61. मम अंतर 130
62. तू ही तो है 132
63. एक दिन...133
64. रे मन, जाग रे जाग 135
65. राम रचा जो, सो ही होई 136
66. मन मेरे 137
67. लेखनहार..138

ध्यान सूत्र

अगमं सुगमं, परम विलक्षणम
पूर्ण सत्यं, पूर्ण सक्षमं
अनहद नादं, समग्र व्यापं
सिमरत नामं, परम आह्लंद ।

अतुल्य प्रतापं
असुर मान मर्दनं
सकल लोक वासं
अद्धितीये प्रकाशं ।

अदाह्यं, अच्छेद्यम्
परम नाद नादं
अशोष्यं, अक्लेद्यम
अगम, निर्विकल्पं ।

सकल जीव श्वासं
समस्ते विनाशं
अनल तेज़ तेजं
नमस्कार तुभ्यम् ।

नमस्कार तुभ्यम्, नमस्कार तुभ्यम्
नमस्कार तुभ्यम्, नमस्कार तुभ्यम् ।

ईश्वर से संवाद

मैंने बोला
है शिकायत
मुझको तुम से,
रोज जाता दर तुम्हारे,
पूजता तुमको,
तुम से करता हर फरियाद,
मगर
तुम तो हो पत्थर,
क्यों रखोगे याद
मेरी छोटी सी फरियाद ।

जेब मेरी, रोज खाली,
मेरी मेहनत और मजूरी
जितनी आती
उससे ज्यादा
है चली जाती,
कुछ ना बचता मेरे पास ।

लोगों की
नित दिन दीवाली,
जेब मेरी, रोज खाली ।
जा ना आऊँगा
मैं तेरे दर पर
मुझे तू भूला है
तो मैं भी तुझको
भूल जाऊँगा ।

मेरे बच्चे,
क्यों हुआ पागल
ये कैसी बात करता है,
मैं कभी भूला किसी को,
जो तुझे मैं भूल जाऊँगा?
दीनबन्धु नाम मेरा,
तू मेरा बंधु, सखा है,
माँगता तू रोज मुझसे
तुझको पता क्या ?
कितने संकट थे
तेरे सर पर,
मैं जिनको अपने सिर पर
झेल जाता हूँ,
पैसा-पैसा चीज क्या है
जब बनी थी
जान पर तेरी,
तेरे अपने थे संकट में,
हाथ अपना तुझ पर रख के
उन पर रख कर,
हर घड़ी तुझको बचाया है
उन को बचाया है,
शुक्रिया की बात तो क्या,
तू सवाली
बनके आया है ।
ले तू पैसा
दूँगा तुझको,
जितना चाहेगा,
मगर ये याद रखना
ना मैं आऊँगा

कभी फिर पास तेरे
जो संकट तुझ पर आएगा ।

दीनबन्धु, हे दयालु,
हे कृपालु
कर क्षमा मुझको,
तेरे उपकार सारे
भूल जाता हूँ,
मैं पागल हूँ
पैसा और पैसा
गाए जाता हूँ ।
दिया जीवन
माता-पिता और भाई बंधु,
प्यारी सी पत्नी
जान से प्यारे ये बच्चे,
मान-मर्यादा ।

जितना आता है
चला जाता है
तो क्या है,
तू ही देता है
तू ही ले लेता है,
मेरा कुछ भी नहीं है
कर कृपा मुझ पर
तू मेरे संग रहना
हर घड़ी
इस पार भी, उस पार भी ।
नयन जल से
मैं पखारूँ पाँव तेरे
कर क्षमा मुझ को
दयालु देव मेरे ।

ऐसा कैसे हो जाता है?

ऐसा कैसे हो जाता है
एक बीज से बन जाता है
पेड़ बड़ा सा,
भोला सा बचपन होता है
बूढ़ा कैसे हो जाता है.
सब कुछ तो होता है तन में
ना जाने क्या खो जाता है,
ऐसा कैसे हो जाता है?

रोज रात को सो जाता है
रोज सुबह को उठ जाता है
एक रात ऐसा होता है
सोते का सोता रहता है,
कल तक जो चलता-फिरता था
ऐसे कैसे सो जाता है?
सब कुछ तो होता है तन में
ना जाने क्या खो जाता है,
ऐसा कैसे हो जाता है?

रोज सुबह सूरज उगता है
रोज शाम को ढल जाता है,
कल जिसको हम कल कहते थे
आज वो कैसे हो जाता है,
पल जो बीत गया था पल में
पल पल कैसे तरसाता है,
ऐसा कैसे हो जाता है?

रोज रोज मंदिर जाता है
राम नाम का जप करता है,
एक रोज ऐसा होता है
राम नाम सत् सब कहते हैं
वो चुपचाप पड़ा रहता है,
चिर निद्रा में सो जाता है,
सब कुछ तो होता है तन में
ना जाने क्या खो जाता है,
ऐसा कैसे हो जाता है?

एक ओइम, एक ओंकार

एक दिवस माह बना
माह बने साल
साल से सदियाँ बनी
सदी बनी काल ।

एक ब्रह्मम
नाद बना
एक ओंकार
एक ओम
जीव बना
जीव से संसार ।

अहम ब्रह्म
अहम जीव
अहम अहंकार
अहम झूठ
अहम सत्य
अहम निराकार ।

अहम राम
अहम कृष्ण
अहम सर्वाधार
अहम जीव
अहम हरि
अहम ही संसार ।

आदि सत्य
मध्य सत्य
सत्य वर्तमान
रात सत्य
दिवस सत्य
सत्य पहर चार
रूप सत्य
रंग सत्य
सत्य ये संसार ।

एक बुद्ध था

एक बुद्ध था
राजा का बेटा था
वैभव में पलता था
प्यारी सी पत्नी थी
छोटा सा बच्चा था
रोग था, ना शोक था
दुख था ना दर्द था ।

एक दिन बीमार दिखा
मरने को तैयार दिखा
वृद्ध दिखा, असहाय दिखा
करता हाय-हाय दिखा
ऐसा कुछ हो गया
विचारों में खो गया
दुख ना हो, शोक ना हो
जरा ना हो, मौत ना हो
कुछ ऐसा कर जाऊँ
इन प्रश्नों से उबर जाऊँ
जन्म ना हो, मरण ना हो
अवांछित कर्म ना हो
सत्य की तलाश करूँ
दुविधा का नाश करूँ ।

राज महल छोड़ चला
पत्नी को, बच्चे को
मात पिता अपने को
सोते में छोड़ चला
करने जगत का भला ।

दर दर भटकता रहा
सुबह चला, शाम चला
उपवन चला, शमशान चला
सत्य की तलाश चला
करने जगत का भला ।

पूजा उपवास किया
संतों का साथ किया
फिर भी ना ज्ञान मिला
सत्य का सामान मिला
थक कर आराम किया
वृक्ष तले ध्यान किया
जीवन का ज्ञान लिया
सुख क्या है, दुख क्या है
मन की अवस्था है
दुख सोचा, दुख होगा
सुख सोचा, सुख होगा ।

गौतम से, बुद्ध हुआ
अंतर्मन शुद्ध हुआ
जीवन का ज्ञान मिला
सत्य का सामान मिला ।

ध्यान

शून्य
बहुत विशाल हो गया,
मैं एक क्षण से
काल हो गया,
नगर खो गया
शहर खो गया
दिशा खो गयी
दशा खो गयी
मेरी आत्मा
वृहत हो गयी
अंधकार का अंत हो गया
शून्य से मैं
अनंत हो गया ।

चहुँ दिश
धवल प्रकाश हो गया
निशा काल का
नाश हो गया ।
अंतर मेरा
शांत हो गया
मेरा लघु तन
कहीं खो गया ।

ध्वनि खो गयी
सभी दिशाएँ
शान्त हो गयीं,
मधुर रागिनी,
कहीं बज उठी ।
ध्यान का कमल
मनस में खिला,
जल ठहर गया,
लहर ना उठी,
प्रभु की छवि
क्षणिक सी दिखी,
धरा पर जनम
सफल हो गया,
अहम खो गया
परम पा लिया,
दोनों एक हुए
ब्रहम बन गया ।

नेति-नेति

ना जनेऊ
ना केश
ना तिलक
ना भेष,
ना टोपी
ना पग्ग,
ना भस्म
ना राख
ना मंदिर
ना ज्योति,
ना पूजा
ना अजान,
ना गीता
ना कुरान ।
ना चिमटा
ना ढोल,
ना कीर्तन
ना शोर,
ना पंडित
ना पठान,
ना हिंदू
ना मुसलमान,
ना पंथ
ना ग्रंथ,
ना साधु
ना संत,

ना पीर
ना मज़ार,
ना मक्का
ना हरिद्वार,
ना रोज़ा
ना उपवास,
ना संयम
ना सहवास,
ना तीरथ
ना दान,
ना गंगा स्नान ।

सब जी का जंजाल
सब माया का जाल
मैं मानूँ ना कोई
जो होना सो होई ।

राम

राम राम, सब जग करे
राम ना रम्या कोए,
हर पल सिमरन जो करे
रूप राम सो होए ।

राम रमय्या, सब जगह
मूढ़ जगत ना पाए
इत उत ढूंढत सब फिरे
निज भीतर नहीं जाए ।

राम नाम अमृत वटी
रोग, दोष मिट जाए
राम नाम जपते रहो
दूर विघ्न हो जाए ।

राम नाम का जप करे
मस्तक तिलक लगाए
मन भीतर कालिख भरी
राम कहाँ से आए ।

राम नाम अनमोल है
मोल भाव ना होए
राम नाम जप बावरे
जो सिमरत गत होए ।

राम नाम जपया नहीं
जनम अकारथ जाए
सांस सांस जप रे मना
जनम सफल हो जाए ।

राम जो रम्या, सब जगह
सबका सदा सहाय
राम साथ है, हर घड़ी
हर पल साथ निभाए ।

राम नाम संकट हरण ।
यम पाश निकट ना आए
राम सिमर मन बावरे
भव सागर तर जाए ।

राम सदा, सच का आधारा
नाम जपो, नर बारंबारा
राम सिमर, दुख क्लेश विनाशे
घर परिवार, सदा सुख वासे ।

राम नाम, सब भय हरण
सिमरत नाम, जो हो मरण
राम सिमर, जो अंत समाया
वो नर निश्चय, सदगत पाया ।

राम नाम ना बिसरीये
बिसर जाए चाहे लोक
राम सिमरते जाइए
निश्चय पाए मोक्ष ।

पुनिः पुनिः जन्मम्

अब मन है
मैं नव शरीर पाऊँ
सुन्दर, कोमल
बच्चा बन,
जन्म पुनः पाऊँ ।
नौ माहा
फिर गर्भ में जाऊँ
फिर बाहर आऊँ,
माता का अमृत स्नेह मिले
फिर दुलराया जाऊँ ।

उठ गिरता
मैं चलूँ दोबारा,
नव अंगना पाऊँ ।
खेल खिलौने मिलें
दोबारा
फिर से तुतलाऊँ ।
फिर से पढ़ूँ
पढ़ाई सारी
फिर यौवन पाऊँ ।
फिर से प्रेम करूँ
दोबारा
आलिंगन पाऊँ ।
नव यौवन, नव देह मिलेगी
नव जीवन होगा,

इस जीवन के संबंधों से
बंध खत्म होगा ।

फिर सोचूँ
मैं तो जाऊँगा,
प्रियों का क्या होगा ।
मेरी पत्नी और बच्चों का
हाल बुरा होगा ।
मुझ बिन कैसे रह पाएँगे
क्या मेरा दुःख
सह पाएँगे ।

फिर सोचूँ
कितने जन्मों से
देह बदलता आया,
कभी किसी घर
कभी किसी घर
नव जीवन पाया ।
मेरे उन जन्मों के साथी
मुझ बिन
तरसे होंगे,
न जाने
कितने प्रिय जन
मुझसे बिछड़े होंगे ।

पुनि पुनि जनमं
पुनि पुनि मरणं
जन्म मरण का
आवागमनम्,
कब तक यूँ ही
चलेगा,
सबको छलने वाला
छलिया
कब तक यूँ ही छलेगा ।

मन तो बंधन है

मन तो बंधन है
अंतर का द्वंद्व,
छन्द जीवन का
अंग मुक्ति का
साधन है ।

युक्ति का तन्त्र
अर्थ, काम, मोह, मोक्ष,
प्रयत्न जीवन पर्यंत ।
सुख तो व्यंजन है
योग, रोग, भोग,
विरल ऐसा संयोग ।

सूक्ष्म वायु के रंध्र
व्याप्त आयु की गंध
युग तो मंचन है
पल भर का ।

माँसों के पिंड अंग
मोह हुआ भंग,
जल में फेंका कंकर
कुछ पल उछली तरंग ।

ईश्वर से फरियाद

मैं–
मुझे शिकायत है
प्रभु तुझ से
मुझ को रखता
वंचित धन से ।
दुनिया की हर रोज दीवाली
मेरी जेब
हर घड़ी खाली ।

अभी बहुत से
काम पड़े हैं
बच्चे भी
हो रहे बड़े हैं
खर्चे ना हो पाते पूरे
रहते सारे काम अधूरे ।
प्रभु–
मेहनत कर
तेरा पैसा मेरे पास रहेगा
तेरी ज़रूरत, जितनी होगी
वही मिलेगा
बाकी मेरे पास रहेगा ।

तू भोला है
सब खो देगा,
ना कुछ तेरे
पास बचेगा ।
मेरे पास रहेगा
तो सब बचा रहेगा ।
पहले भी तू गँवा चुका है
तेरा सारा काम रुका है,
पहले जो
मुझको दे देता,
मैं तुझ को गिन गिन के देता
तेरा पैसा कम ना होता
तुझ को उस पर
सूद भी देता ।
मैं–
हे माधव
गोबिंद, मुरारी
तेरी ही माया है सारी
क्या खोया था
क्या पाया है
जो कुछ मेरा
वो तेरा है ।

मुझ को बस
वरदान यही दे
कभी थकूँ ना
दान यही दे
तुझ को पता ज़रूरत मेरी
जो भी दे तू
इच्छा तेरी ।

अपने चरणों की भक्ति दे
जीने की इच्छा शक्ति दे,
काम गलत कोई मुझ से ना हो
इतना बस वरदान मुझे दे,
निज भक्ति का
दान मुझे दे ।

जागरण

रात भर जागने से, कभी जागरण नहीं होता
चीख कर भजने से, कभी जागरण नहीं होता
जागरण का अर्थ, जीवन समर में जागना है
जागरण का अर्थ, मन के भंवर में जागना है ।

कहता है वो, मिल अकेले में
ढूँढता उस को, तू मेले में
रात भर वो तकता, तेरी बाट
तू जमाने को, दिखाता ठाठ ।

रात भर जागो, ना जागो
भोर का उजियारा, मन भर लो
ज्ञान का प्रसाद पाने को
अपनी झोली, साफ तो कर लो ।

जगराता मन का करो
प्रेम जीवन में भरो,
दीप, सूरज का है
नभ की थाली में,
आरती मन में करो
हर पहर जगराता करो ।

हे कृष्ण

हे कृष्ण,
कितने रूप तुम्हारे
योगी भी भोगी भी
राधा के प्रियतम भी
मीरा के जीवन भी
गीता के उपदेशक
अर्जुन के सारथि भी
सुदर से सुंदरतम
दुखियों के अवलंबन
हे माधव, हे गोपाल
हे मुरारी, हे कृपाल
तुम पर सब ही निहाल

मैं तन हूँ
तुम चेतना हो,
मैं मन हूँ
तुम भावना हो,
तुम हर पल
साथ हो मेरे,
तुम संग मेरे
सांझ सवेरे,
तुम बिन मैं क्या
हे मेरे प्राण प्रिय,
तुम से ही
सर्वस्व मेरा,

प्रियतम, जीवन व अवलंबन
रखा है मैंने नाम तेरा

मन के इस मंदिर में
मूरत तुम्हारी है
हे माधव, गोबिंद
नटवर, मुरारी हे,
तुमरी अनुकंपा से
हर पल दीवाली है,
मनमोहन, दुखभंजन
तुम पर बलिहारी हे
राधा के मोहन हो
मीरा के जीवन हो
गीता के गायक हो
युग युग के नायक हो,
अर्जुन के हो प्रेरक
दुष्टन के मारक हो,
संतन के तारक हो
बंसी के हे बजइया,
जै कृष्णा, जै कन्हैया ।

धन गुरु गोबिंद सिंह

धन गुरु गोबिंद सिंह
धन धन गुरु गोबिंद सिंह
माँ गुजरी के लाल
गुरु गोबिंद सिंह,
दुष्ट जन के काल
गुरु गोबिंद सिंह,
खालसा के सृष्टा
गुरु गोबिंद सिंह,
नवयुग के दृष्टा
गुरु गोबिंद सिंह,
धन गुरु गोबिंद सिंह
धन धन गुरु गोबिंद सिंह ।

वारे चारो लाल
गुरु गोबिंद सिंह,
हर हाल में खुशहाल
गुरु गोबिंद सिंह,
धर्म के रक्षक
गुरु गोबिंद सिंह,
पापी के भक्षक
गुरु गोबिंद सिंह,
धन गुरु गोबिंद सिंह
धन धन गुरु गोबिंद सिंह ।
तुम पर हम को नाज़
गुरु गोबिंद सिंह,

धर्म के सरताज
गुरु गोबिंद सिंह,
योग में योगी
गुरु गोबिंद सिंह,
लेखनी के धनी
गुरु गोबिंद सिंह,
धन गुरु गोबिंद सिंह
धन धन गुरु गोबिंद सिंह ।

युग प्रवर्तक संत
गुरु गोबिंद सिंह
रचे धर्म ग्रंथ
गुरु गोबिंद सिंह,
हे पिता दश्मेश
गुरु गोबिंद सिंह,
संत सिपाही वेश
गुरु गोबिंद सिंह,
धन गुरु गोबिंद सिंह
धन धन गुरु गोबिंद सिंह ।

निश्चय कर अपनी जीत करो

बहुत भले हो
किसी का बुरा नहीं करते,
बुरा नहीं कहते,
बुरा ना सुनते हो,
लेकिन
किसी का भला किया,
क्या अँधियार मिटाने की खातिर,
बन दीप जले हो,
किसी पर जुल्म हुआ जब,
बन तलवार लड़े हो
किसी को भूखा देखा,
प्यासा देखा,
निर्धन देखा,
कुछ किया कि
उसका हो भला,
कि भूख मिटे,
कि प्यास मिटे,
खुशहाल बने ।

चुप रहते हो
ना किसी से लड़ते हो,
ना किसी पचड़े में पड़ते हो,
सब कहते हैं
तुम बहुत भले हो,
पर जुल्म पड़ोसी पर होता हो
या अस्मत कोई खोता हो,
छुप जाते हो
डर कर के क्या.
सो जाते हो,
धिक्कार है तुम को
कहने को हो तुम बहुत भले,
इंसान खोखले हो ।

ना डरो किसी से
सिर्फ़ खुदा से डरो ।
मत करो बुरा किसी का
पर बुरा किसी का हो
मत सहो
सच कहो
झूठ मत कहो
मगर झूठ जो कहे
कोई सच कहने में
मत डरो
अन्याय ना करो
ना होने दो
प्रतिरोध करो
नर हो तो
नर सी बात करो ।

ना प्रहार करो
ना प्रहार सहो
जीवित हो
मुर्दा मत बनो
जा लड़ो
दीन के हेत
जीवन चाहे ये मिटे
मत हटो
जा डटो
और लड़ कर अपनी जीत करो ।

देखते रहो

मंत्र भी
वाणी भी
मौन भी
कहानी भी
बचपन भी
जवानी भी
धूप भी
छाँव भी
शहर भी
गाँव भी
जो भी दिखे
सिर्फ़ देखते रहो ।

पकड़ो नहीं
जकड़ो नहीं
रूठो नहीं
अकडो नहीं
रोको नहीं
टोको नहीं
जोड़ो नहीं
तोडो नहीं
जो भी दिखे
सिर्फ़ देखते रहो ।

जो देह हो
जो सांस हो
जो छन्द हो
जो गंध हो
जो रूप हो
जो रंग हो
जो सर्द हो
जो गर्म हो
जो नाम हो
जो ग्राम हो
जो सुबह हो
जो शाम हो
जो भी दिखे
सिर्फ़ देखते रहो ।

अंधियारा हो
उजियारा हो
अपकर्ष हो
उत्कर्ष हो
सहवास हो
संन्यास हो
उपवास हो
उपहास हो
जो भी दिखे
सिर्फ़ देखते रहो ।

जब ध्यान हो-तब देह को, नेह को, ताप को, संताप को ज्ञान को- सिर्फ़ देखते रहो, जो भी दिखे ।

ऐसे मत जी

ऐसे
मत जी,
विष घूँट
मत पी ।
अमृत सागर
अंतर तेरे,
मंथन कर,
भले का
बुरे का
चिंतन कर ।

ऐसा कर
हलाहल
अमृत में बदल,
पाप वो
मन को जो
दूषित करे,
पुण्य वो
मन को जो
सुशोभित करे ।

हर पल
सोता क्यों,
हर पल
रोता क्यों,
अब जाग
जो सोया,
सो गए
उस के भाग ।

आराम
मत कर,
कर्म कर.
कर्म को
निज धर्म कर,
उठ जा
आकाश को
छू ले,
सूरज सज़ा
मस्तक पर
तारों की
माला पिरो ले ।
कर प्रहार
मुष्ट मार,
पर्वत को तोड़,
नादियों को मोड़,
आकाश के
सीने को छेद,
पाताल से
पानी निकाल ।

ना पाप कर,
स्वयं पर
विश्वास कर,
उठ, हो खड़ा
प्रहार कर
पाप, अत्याचार पर,
ना रुक
ना झुक
ना मर
ना डर
जो करना है
वो कर
इतिहास में
हो जा अमर ।

तू ही तू

कौन पिता,
कौन मात,
कौन संग
कौन साथ
कौन रूप
कौन रंग
कौन मीत
कौन प्रीत
कौन जात
कौन पात
कौन पहर
कौन रात ।

कौन देह
कौन गंध
कौन मुक्त
कौन बँध

कौन श्वेत
कौन काल
कौन लघु
कौन विशाल
कौन मृत्यु
कौन जीव
कौन दैत्य

कौन देव
कौन अनेक
कौन एक ।

कौन पहर
कौन काल
कौन सूक्ष्म
कौन विशाल
कौन आदि
कौन अंत
कौन दुष्ट
कौन संत
कौन धरा
कौन चंद्र
कौन तीव्र
कौन मंद ।

कौन स्वर्ग
कौन नर्क
कौन संधि
कौन विसर्ग
कौन प्रीत
कौन घृणा
कौन घटा
कौन जमा
कौन शब्द
कौन मौन
कौन बृहत
कौन गौण

कौन युद्ध
कौन बुद्ध
कौन नकल
कौन शुद्ध ।

कौन गर्भ
कौन मात
कौन बंधु
कौन तात
कौन सृष्ट
कौन नाश
कौन शिखर
कौन नींव
कौन तिमिर
कौन दिया
कौन जीव
कौन जन्तु ।

कौन घड़ा
कौन कुम्हार
कौन जगत
कौन रचनाकार
कौन स्वर्ग
कौन पाताल
कौन काल
कौन अकाल ।

तू ही तू है
तू ही तू
हर तरफ है
तू ही तू
तू ही तू है
तू ही तू ।

आरती

प्रेम की मंदाकिनी
बह रही झर झर
हिमालय बन गया,
मेरा शिखर,
अंतःकरण मेरा
गंगोत्री बन गया
गंगा बही अविरल ।

उदित हुआ सूरज
मेरे आकाश में,
छाने लगीं
किरणें धवल उज्जवल,
आलोकित मन हुआ मेरा
तन हुआ शीतल ।

दीप सब जलने लगे
मंदिर मेरे,
शंख से बजने लगे
अंतर मेरे
नभ के तारे
दीप बन सजने लगे,
मौन में
हम आरती करने लगे ।

तेरा मन, मेरा मन

तेरा मन, मेरा मन
इसका मन,
उसका मन
जाने किस किस का
मन ।

कोमल मन, सुंदर मन
घायल मन, पागल मन
फूलों में अटका मन
पेड़ों से लटका मन
मदिरा में भटका मन
पैसों में अटका मन
ऐसा मन, वैसा मन
तेरा मन, मेरा मन
इसका मन, उसका
मन ।

झर झर बरसता मन
थर थर थिरकता मन
चलता मन, थकता मन
चुप सा मन, बकता मन
है कैसा कैसा मन
इसका मन, उसका मन
जाने किस किस का
मन ।

योगी मन, भोगी मन
सुंदर मन, रोगी मन
जीने को, आकुल मन
मरने को व्याकुल मन
कातिल मन, काबिल मन
तेरा मन, मेरा मन
इसका मन, उसका मन
जाने किस किस का
मन ।

विस्मय

सोना, जागना
चलना, फिरना
आना, जाना
खाना, पीना
मरना, जीना
मिलना, जुलना
हिलना, डुलना
बातें करना
बातें सुनना
सपने बुनना
सब विस्मय है ।

रात का होना
रात में सोना
दिवस का आना
सूरज उगना
सूरज ढलना
चाँद चमकना
चाँद का छुपना
सब विस्मय है ।

रूप सलोना
प्रीत का होना
हृदय धड़कना
नयन फड़कना

देह का सजना
देह का तजना
प्यार में जीना
प्यार में मरना
सब विस्मय हैं ।

सुंदर चेहरे
गूँगे बहरे
अंधे काने
लंगडे लूले
बाग में झूले
मोर का नर्तन
ख्वाब सुनहरे
सब विस्मय है ।

भूख का लगना
भूख का भरना
प्यास का लगना
प्यास का बुझना
सांस का चलना
सांस का रुकना
गर्भ में आना
गर्भ से जाना
देह का तजना
सब विस्मय है ।

दुनिया आनी जानी है, सकल जगत हैरानी है ।

स्वप्न

जब मैं सोता हूँ
मेरा मन जग जाता है,
मेरा अंतर्मन
मुझ को स्वप्न दिखाता है ।
जग एक सपना
सपने में सपना,
भागा दौड़ी,
धूम धडाका
सब दिखलाता है,
जब मैं सोता हूँ
मेरा मन जग जाता है ।

कभी नींद में डर जाता हूँ
जाने कौन डगर जाता हूँ,
कभी-कभी मैं मर जाता हूँ
मरे हुओं को पा जाता हूँ
जाने कौन जगह जाता हूँ
मैं हँसता हूँ, मैं रोता हूँ,
जाने मैं क्या-क्या करता हूँ
किस दुनिया में खो जाता हूँ
अंतर्मन मेरा मुझको
तरह-तरह के दृश्य दिखाता है,
जब मैं सोता हूँ
मेरा मन जग जाता है ।

जाती रात, सुबह आती है
जाती सुबह, धूप आती है
मेरे मन की पीड़ा भी बस
साथ-साथ बढ़ती जाती है ।
इस जीवन का मतलब क्या है
जग सपना है
तो सच क्या है
जीना क्या है, मरना क्या है,
ऐसी बातों से अंतर्मन
भरमा जाता है,
जब मैं सोता हूँ
मेरा मन जग जाता है ।

आँख न खुल पाएगी

आँख ना खुल पाएगी
नब्ज़ ना चल पाएगी
हाथ ना उठ पाएगा
देह भी जल जाएगी
ये एक दिन होना यकीनन है
हमारे साथ,
तब भी भागे फिरते हैं
खुद पर गरूर करते हैं
खुदा कुछ भी नहीं है
सभी कुछ हम ही है
कहते फिरते हैं,
कब अक्ल हम को आएगी
जब आँख ना खुल पाएगी
नब्ज़ ना चल पाएगी
हाथ ना उठ पाएगा
देह भी जल जाएगी ।

कैसे कह दूं
झूठ है ये
कुछ सच नहीं है,
बहुत सी बात होती है
समझ लेते हैं होंगी
पर ना होती हैं,
मगर ये बात सच है
कि सुबह ऐसी आएगी

जब आँख ना खुल पाएगी
नब्ज़ ना चल पाएगी
हाथ ना उठ पाएगा
देह भी जल जाएगी ।

क्या भरोसा
देह फिर मिल पाएगी
या कि ना मिल पाएगी
जन्म लेंगे फिर से हम
या बारी फिर ना आएगी,
तब भी
इस को, उस को
बोलते हैं
हम सभी कुछ हैं
जैसे हमको
मौत छू ना पाएगी
हस्ती ना मिट जाएगी
क्या अक़्ल उस दिन आएगी
जब
जब आँख ना खुल पाएगी
नब्ज़ ना चल पाएगी
हाथ ना उठ पाएगा
देह भी जल जाएगी ।

माफी चाहता हूँ, मेरी यह रचना कुछ लोगों को शायद बहुत कठोर लगे, लेकिन मेरे दोस्त, जीवन की कड़वी सच्चाई यही है । एक दिन ऐसा हमारे जीवन में अवश्य आना है, जो जीवन को अंतिम दिन होगा । मेरा इस रचना को लिखने का उद्देश्य किसी को डराना नहीं है, बल्कि सिर्फ़ यह कहना है कि हम अपने जीवन को सार्थकता से जिएँ ।

एक एक दिन को पकड़ लो

एक एक दिन को पकड़ लो
बांहों में जकड़ लो
मुट्ठी में बालू सा
फिसल फिसल जाता है
वक्त गया, वापिस ना आता है ।

रोज सुबह जीते हैं
रात को मर जाते हैं,
दिन के दावानल को
मेहनत के मेघ
भिगो जाते हैं,
रात के सन्नाटे में
कोलाहल सपनों के
हम को जगा जाते हैं ।

रोज नई आशाएँ
रोज नई चिंताएँ
गिर के संभल जाते हैं
फिर से फिसल जाते हैं ।

सुंदर से सुंदर भी
शख़्श बदल जाते हैं,
अक्श बदल जाते हैं,
पतझड़ की कौन कहे
सावन के मेघ कभी,
जीवन की बगिया पर
बिजली गिरा जाते हैं
अगन लगा जाते हैं ।

बचपन कब हुआ युवा
बूढ़ा हो जाता है,
अर्थी बन भट्टी में
भस्म हुआ जाता है,
जब तक
ये अंतर्मन जागता है
वक़्त निकल जाता है ।

हर पल के
स्पंदन को छू लो
अगले पल
दिल की ये धड़कन
हो भी या ना भी हो
इस चिंता को भूलो
आशाओं के झूले में झूलो
ऊँची से ऊँची
तुम ऊँचाई को छू लो ।

कहाँ जाऊँगा

कहाँ जाऊँगा
जब जाऊँगा
मैं छोड़ कर इस देह को
उड़ जाऊँगा
बह जाऊँगा
मैं जाऊँगा किस देश को ।
फिर आऊँगा
ना आऊँगा
मैं पाऊँगा किस भेष को ।

क्या अकेला जाऊँगा
या साथ होगा,
याद होंगी बात सारी
या भूल जाऊँगा
माता-पिता, संगी सखा
क्या भूल पाऊँगा
रूह भटकेगी कहीं
या जन्म पाऊँगा ।

मैं बचूँगा
या जलूँगा
साथ निज शव के,
पास शिव के जाऊँगा
या शून्य बन
जाऊँगा मैं खो,

मैं रहूँगा मौन
या किलकारियां भर
घर किसी के गोद पाऊँगा ।
कर्म मेरे सब जलेंगे
साथ शव के,
या कर्म बंधन
फिर से बांधा जाऊंगा,
नर बनूँगा
या की नारी
कौन सा मैं रूप पाऊँगा ।

ना पीर मिला
ना पैगम्बर
जो जाकर वापिस आया हो,
ना फकीर मिला
ना कबीर मिला
जिस ने ये राज बताया हो
सदियों से लोग सभी जाते
है कोई जो लौट कर आया हो ।

ये जीवन ही
बस जीवन है,
जाने क्या इस के आगे हो,
कई पंथ थके
कई ग्रंथ थके
कोई भेद ये जान ना पाया हो ।

सारा जीवन पढ़त गंवाया

सारा जीवन पढ़त गँवाया
पढ़त पढ़त, पंडित कहलाया
अब सोचा तो समझ ये आया
कि कुछ भी मैं समझ ना पाया ।

मुण्ड मुंडाए, कोई हर ध्याए
केश बढ़ा, कोई प्रभु गुण गाए
हरि खोजन कोई, वन वन जाए
बन बैरागी, अलख जगाए ।

केश लोच
कोई करे तपस्या
साधु बन कोई, माँगे भिक्षा
कोई जन, तीरथ तीरथ जाए
सिद्ध योगी को शीश नवाये ।

शंख बजा कोई शिव को ध्याए
तिलक लगा पंडित कहलाए
प्रभु अवतार की कथा सुनाए
झूम झूम हरि के गुण गाए ।

चार पहर कोई करे अज़ान
मन अंतर कोई जपे हर नाम
कोई प्रभु येशू के गुण गाए
गुरु ग्रंथ कोई शीश नवाये ।

कोई कुण्डलिनी ध्यान लगाए
सहज योग की विधि बताए
कोई भोग में योग को चाहे
कृष्ण कन्हाई कोई मन भाए ।

मूढमति मैं समझ ना पाऊँ
मैं किस विधि से हरि को ध्याऊँ
कैसे मैं प्रभु दर्शन पाऊँ
अंतर ज्ञान की ज्योति जगाऊँ।

मात पिता को मत बिसराना

आज तो
हम सब साथ हैं
मैं हूँ, तुम हो
बच्चे हैं
प्यार है, प्रीत है
जीवन का
मधुर गीत है
कल जब
बच्चे अपने घर चले जाएँगे
अकेले हम रह जाएँगे ।

आज तो
बच्चे हमारे साथ हैं
लड़ते हैं, झगड़ते हैं
प्यार से लिपटते हैं ।
लेकिन अब बच्चे
बड़े हो रहे हैं,
अपनी अपनी
दुनिया में खो रहे हैं,
कल जब
हमसे ये दूर चले जाएँगे
याद बहुत आएँगे ।

बहुत से लोग हैं
बच्चे जिन के दूर हैं
मिलने से मजबूर हैं,
फोन पर बतियाते हैं,
अपने दुख दर्द छिपाते हैं,
सब कुछ भला ही बताते हैं,
रात भर ना सोते हैं
अकेले में रोते हैं ।

आज तो हम युवा हैं
शरीर में ताकत हैं
किसी पर निर्भर नहीं
सब, खुद करने की आदत है,
लेकिन बुढ़ापा भी आएगा
ये शरीर जर्जर हो जाएगा,
तब ये बच्चे ही
हमारे हाथ की लाठी होते,
हमारे साथ रहते
हम चैन से सोते,
लेकिन एक दिन
ये हमारे जिगर के टुकड़े,
हम से दूर जाएँगे
हम अकेले
कैसे रह पाएँगे?

कल उनका भी घर होगा
परिवार होगा,
अपनी ही दुनिया होगी
प्यारा सा संसार होगा,
बहुत व्यस्त हो जाएँगे,
चाह कर भी
मिल नहीं पाएँगे ।

उन की दुनिया
सूरज की रोशनी
से रोशन रहे,
हमारा प्यार, आशीर्वाद
हर पल उनके साथ होगा ।

मेरी यह रचना समर्पित है, उन सभी माता पिता के लिए, जो अपने बच्चों की छोटी-छोटी खुशियों के लिए, उन की पढ़ाई लिखाई के लिए, कैरियर बनाने के लिए अपना जीवन लगा देते हैं । मेरी यह रचना उन सब बच्चों के लिए भी है, जो अपनी दुनिया में इतना खो जाते हैं, कि अपने बूढ़े माता पिता को भूल जाते हैं । मेरी यह रचना उन बेटा बहू के लिए भी हैं, जो बूढे माता पिता से ज़मीन जायदाद के बँटवारे के लिए लड़ते हैं, उन को अपशब्द कहते हैं, और भूल जाते हैं कि उन को भी बूढ़ा होना है, और उन के बच्चे उन से वैसा ही व्यवहार करेंगे ।

उस क्यों भूला

उस क्यों भूला
जो सदा सहाइ,
उस क्यों भूला
जो पिता, माता, भाई,
उस क्यों भूला
जो सदा ही देता,
उस क्यों भूला
जो कुछ ना लेता ।

उस क्यों भूला
जो प्राण आधारा,
उस क्यों भूला
जो संग सहारा
उस क्यों भूला
जो हर पल साथा,
उस क्यों भूला
जो अंग अंग व्यापा ।
उस क्यों भूला
जिन गर्भ में पाला,
उस क्यों भूला
जिन जीवन डाला,
उस क्यों भूला
जो हृदय में धड़के,
उस क्यों भूला
जो नयन में फड़के ।

उस क्यों भूला
जो जगत का स्वामी,
उस क्यों भूला
जो अंर्तयामी,
उस क्यों भूला
जो घट घट व्यापे,
उस क्यों भूला
जो दुर्गुण ढापे ।

उस क्यों भूला
जो पल पल पाले,

उस क्यों भूला
जो सदा दयाले,
उस क्यों भूला
जो अगम, अगोचर,
उस क्यों भूला
जो सखा, सहोदर ।

अब जीने का मन करता है

दुख है मुझ को
कुछ किया नहीं,
जीवन को
अब तक जिया नहीं,
सब ने जो चाहा
किए गया,
अपनी मर्ज़ी से
जिया नहीं ।

काले अक्षर को
पढ़े गया,
किसी प्रेम गीत को
पढ़ा नहीं,
कुछ जमा किया
कुछ घटा किया,
मैं मोल भाव में
उलझ गया,

जिस कारण
जग में आया था,
उस कारण को ही
बिसर गया ।

बचपन से
यौवन तक भागा,
यौवन से
बढ़ा बुढापे को ।
सुंदर चेहरों पर
रीझ गया,
मन पावनता को
छुआ नहीं ।
तन की मांसलता को देखा,
अंतर का अमृत
पिया नहीं ।

घर में कितने
मेहमान भरे,
हर कमरे में
इंसान भरे,
इन सब की
खातिर किए गया,
जो द्वार पे दस्तक देता है
उस गृह स्वामी को
भुला दिया ।

अब प्रियतम को
मन भीतर कर,
बाहों के बंधन में
भर कर,
दिन रात
चरम संसर्ग प्रणय मधु,
पीने का मन करता है,
अब जीने का मन करता है ।

कुछ नया सा हो

रोज उठना
काम करना
कर के थकना
थक के सो जाना,
थक गया हूँ मैं
रोज जगने से
रोज सोने से,
थक गया हूँ मैं
इस विधा से
इस विधि से ।

जब से आया हूँ
मैं इस धरती पर
हो रहा है यही,
जाने कब तक हो
रोज उजियारा
रोज अंधियारा,
कुछ नया अब हो
ना ये सोना हो
ना ये जगना हो
ना ये थकना हो । ।

ऐसा कुछ तो हो
कुछ नया सा हो
ना ये सोना हो
ना ये जागना हो,
कुछ तो ऐसा हो
कुछ नया सा हो,
जाने कैसा हो
रोज का ये क्रम
एक दिन टूटे,
मेरे मन का भ्रम
एक दिन टूटे ।

ऐसी दुनिया हो
लोग भी ना हों
शोर भी ना हो,
ना कहें हम कुछ
ना कोई कुछ कहे,
सब कहीं खो जाए
कुछ नया हो जाए,
न अंधेरा हो
न उजाला हो,
कुछ तो ऐसा हो
जाने कैसा हो ।

काश ऐसा हो
जाने कैसा हो
कैसे मैं समझाऊँ,
मन मेरे क्या हो
कुछ नया सा हो,
न जन्म ही हो
न मरण ही हो,
गर्भ में माँ के
न शरण ही हो,
कुछ तो ऐसा हो
कुछ नया सा हो ।

बार बार जन्म होना, बार बार मरण होना,
थक गया हूँ मैं । कुछ नया सा हो, जाने कैसा हो ।

मैं तेरी गोद में हूँ

बहुत से लोग हैं
इस दुनिया में
बहुत हसीन
बहुत ज़हीन
बहुत कमसिन
और जाने क्या नहीं
एक हम हैं
नहीं, कुछ भी नहीं
ना ज़हीन
ना हसीन
ना कमसिन
ना हमारा कोई नाम
ना हम ने किया कोई काम

ना ही पाया हमने
कोई मुकाम
ना ही हम
बन सके महान
ना ही बना सके
बड़े-बड़े मकान
क्या किया हमने
क्यों जन्म लिया हम ने

बता दे मेरे प्रभु
क्यों किया ऐसा
ना रूप, ना रंग,
ना रुपया, ना पैसा
क्यों किया ऐसा
बता ना
क्यों किया ऐसा ।

सुन मेरे बच्चे
तू कैसी बात करता है
दिए माता, पिता
भाई, बंधु
प्यारी सी पत्नी
फूल से बच्चे
दोस्त, साथी
मान मर्यादा
कितना कुछ
तुझको दिया
फिर भी शिकायत
मुझसे करता है
याद रख
सबको सभी कुछ
तो नहीं मिलता ।

किसी को रूप मिलता
माता, पिता का सुख नहीं
मिलता
किसी को पैसा मिलता
भोगने का सुख नहीं
मिलता
किसी को नाम मिलता
दुख में कोई साथ खडा
इंसान नहीं मिलता

कर क्षमा
मेरे प्रभु,
उपकार तेरे भूल जाता हूँ
मैं पागल हूँ,
नाम, रूप, रुपया पैसा
गाए जाता हूँ ।
जो दिया अच्छा दिया
वो ही दिया
मैं जिसके काबिल था ।
मैं तेरी गोद में हूँ
हे प्रभु,
तू मेरा माता पिता है
संगी-साथी है,
फिर मुझे परवाह क्या ।
शुक्रिया तेरा
हे प्रभु शुक्रिया तेरा ।

क्या पता

सच है क्या
और झूठ क्या है
क्या पता,
क्या खुदा है
या नहीं है
क्या पता,
हम अमर है
या हैं नश्वर
क्या पता,
जन्म लेंगे फिर
या ख़त्म हो जाएगा
नामो निशान ।

कोई ताकत है
नहीं है,
या सभी कुछ
स्व चालित है,
देखता है कोई
हमको हर घड़ी,
सब दिलासे हैं
जमाने के
या कुछ भी नहीं है,
क्या पता
सच है क्या,
और झूठ क्या है

क्या पता ।

हम अकेले हैं
या कहीं कोई और है,
इतने बड़े
संसार में,
एक धरती ही
मिली
जीवन को बसने के लिए
या है कोई जीवन
किसी और भी
नक्षत्र पर ।
ये क्या पता
सच है क्या
और झूठ क्या है
क्या पता ।

जो लिखा है
पोथियों में धर्म की
वो सच भी है,
या झूठ हैं,
या किसी नादान
पंडित की
समझ की भूल हैं,
ये क्या पता,
सच है क्या
और झूठ क्या है
क्या पता ।

आदमी
आदम की है औलाद
या है
बंदरों की ।
झूठे हैं
सब के ये ख्यालात
ये किस को पता है,
चाँद पर पहुँचा
भी है इंसान
या सब झूठ है
सच है क्या
और झूठ क्या है
क्या पता ।

मैं कुछ भी न देख सकूँगा

मेरा होना, ना होना
अर्थ कोई रखता है क्या
एक दिन जब शून्य बन
विलीन हो जाऊँगा
किस किस को याद आऊँगा
मुझ को ना कुछ पता चलेगा
मैं कुछ भी ना देख सकूँगा ।

सब कुछ होगा
धरती, सूरज, चाँद, सितारे
लोग भी होंगे
बगिया में होगी बहार भी
बारिश होगी रिमझिम रिमझिम
मैं कुछ भी ना देख सकूँगा ।

होगी होली, दीवाली भी
ऐसे ही संसार चलेगा
घर भी होगा, नगर भी होगा
मेरा अस्तित्व मगर ना होगा
कोई मुझ को याद करेगा
सपना समझ कोई भूलेगा भी
मैं कुछ भी ना देख सकूँगा ।

सपने में मुझ को देखेंगे
मेरे अपने ही तरसेंगे
उन के आँसू ही बरसेंगे
वे ही मुझ को याद करेंगे
ऐसे ही दिन पर दिन बीतेंगे
मैं कुछ भी ना देख सकूँगा ।

मेरे दोस्त

मेरे दोस्त
तुम्हारे आँखों की कोरों में
चमकते आँसुओं को
मैं देख सकता हूँ
लेकिन उन्हें पोंछने की सामर्थ्य
मुझ में नहीं है ।
इत्र से महकता मेरा कीमती रुमाल
तुम्हारे मैल कुचैले आँसुओं को
पोंछने के लिए तो नहीं है ।

तुम्हें याद होगा
तुम्हारे यौवन की दहलीज़
मेरे घर की दहलीज़ पर
आकर रुक गयी थी
अपने तरकश के सभी विषैले बाणों से
मैंने तुम्हारे संयम की परीक्षा ली थी,
घोल दिया था, तुम्हारे शरीर में
सभ्यता और संस्कृति का जहर ।

मेरे दोस्त
तुम येशू नहीं हो
लेकिन मैं जानता हूँ
कि सलीब पर लगे रक्तिम छींटे
तुम्हारे रक्त के हैं ।
तुम्हारे वक्ष स्थल के कैन्वस पर

अभी भी चित्रित है
मेरी अमानुषिकताओं के प्रमाण ।

मैं जानता हूँ
तुम्हारे अंतर का ज्वालामुखी
कभी भी धधक सकता है,
तुम्हारी कटुता का गर्म लावा
मुझे आत्मसात कर सकता है ।
पूंजीवाद के कितने ही दुर्ग
एक के बाद एक
ढहते देख चुका हूँ ।

मुझे तुम से सहानुभूति है
केवल सहानुभूति,
सहायता की अपेक्षा मुझ से करना
तुम्हारी मूर्खता है ।
तुम्हारी दीनता के कटोरे में
दो तीन मुट्ठी आटा तो मैं डाल सकता हूँ
ताकि उसे खा कर
तुम मेरी दया का गुणगान करते रहो ।

मेरे दोस्त
सुना हैं
भूख से इंसान मर सकता है
लेकिन मैं तुम्हें
मरने नहीं दूँगा,
क्योंकि तुम्हारे शरीर के धरातल पर ही टिकी है
मेरे महल की आधारशिला ।

तुम्हारे चेहरे की झुर्रियों में
समय के क्रूर हाथों ने
दीनता की जो करुण गाथा लिख दी है
उसे मैं पढ़ तो सकता हूँ,
लेकिन पढ़ना नहीं चाहता
क्योंकि मुझे डर है
कि उसे पढ़ने के बाद
मैं नक्सलवाद के
घने जंगलों में खो जाऊँगा ।

लोग

इस धरती पर
कितने लोग
धूर्त, पाखंडी
मूर्ख, मदहोश,
योगी, रोगी
खुदगर्ज और चोर
संत, क्रूर
नादान, कठोर
कितने चेहरे
कितने रूप
कितने मन
कितने हैं विचार
कितने पाप
कितने सद व्यवहार

अन गिन जीव
अन गिन जन्तु,
अनगिन विष धर,
अन गिन मूढ़,
अन गिन चन्ट
अन गिन रावण
अन गिन कन्स
अन गिन पापी
अनगिन संत ।

प्रेमी, कामी
दुर्जन, व्यभिचारी,
सती, पति
सज्जन, अत्याचारी,
साधक, भक्षक
दीन भिखारी ।

अगम, अगोचर
लोक, परलोक,
सागर, पाताल
वाटिका अशोक
स्वर्ग, नर्क
सूरज और चाँद
कोटि ग्रह, कोटि धाम
कोट सृष्ट, कोट ग्राम ।
कितने सूरज
कितने चाँद
कितने तारे
कितने ब्रह्मांड ।

मन मूरख
ना समझे भेद
कहत थके
पुराण और वेद
रूप ना रंग
आकार, ना भार
ना सूक्ष्म, ना स्थूल
ना आदि, ना अंत
कौन रचयिता

कौन कुम्हार
कौन सृष्टि का
सृजनहार ।

सुख क्या है

सुख क्या है
पैसा, घर या प्यार,
क्या मिल जाए
मन हो जाए खुशहाल,
हो मकान और ज़मीन
एक बड़ा से बंगला
और मोटर कार,
पति हो, पत्नी हो
और बच्चे परिवार,
सुख क्या है
पैसा, घर या प्यार ।

कोई हुआ पागल
दिन रात भागे
पैसों के पीछे,
कई रात जागे
इतना मिल जाए
जीवन तर जाए ।
एक दिन ऐसा हो
जीवन ही दे ना साथ,
खाली आया था
और जाए खाली हाथ
सुख क्या है
पैसा, घर या प्यार ।

किसी को चाहत है
शोहरत की, ताकत की,
ऐसा हो जाए
मेरा हो जाए नाम,
मुझ को सब जाने
मेरे सब हो जाए काम,
मुझ से सब नीचे हों
मैं बन जाऊँ भगवान,
सुख क्या है
पैसा, घर या प्यार ।

किसी को हसरत है
किसी प्रेमी की,
प्यार खुदा मान लिया
जिस को चाहा
मिल जाए वो,
छूटे चाहे सब संसार,
प्यार में जीना और मरना हो
बाकी सब है बेकार,
सुख क्या है
पैसा, घर या प्यार ।

मैं भी इन में से एक हूँ

आ रहे है, जा रहे हैं
खा रहे हैं, पी रहे हैं
मर रहे हैं, जी रहे हैं
उठ रहे हैं, गिर रहे हैं
मैं भी, इन में एक हूँ ।

घर को भागे जा रहे हैं
गाड़ियाँ चला रहे हैं
बस में लदे जा रहे हैं
पसीने से तरबतर हैं
फिर भी मुस्कुरा रहे हैं
मैं भी इन में एक हूँ ।

मंदिरों में जा रहे हैं
घंटियाँ बजा रहे हैं
मोदकों का भोग लगा
प्रभु को रिझा रहे हैं
मैं भी इन में एक हूँ ।

दुख में याद कर रहे हैं
सुख में भूले जा रहे हैं
भोग में विलास में
जिंदगी गँवा रहे हैं
जिंदगी का अर्थ
बिना जाने जिए जा रहे हैं
मैं भी इन में एक हूँ ।

मैं हिन्दु, तू मुसलमान

मैं हिंदू
तू मुसलमान
हम दोनों
इंसान
मैं पढ़ता गीता
तू पढ़ता कुरान
तू रखता रोजे
मैं उपवास
तू जाता मक्का
मैं कैलाश
तू अहमद मौला
मैं जायस राज ।

होता जो तू हिंदू
मैं होता मुसलमान
तू पढ़ता गीता
मैं पढ़ता कुरान
मैं होता मौला
तू होता राज
क्या बदल जाता कुछ खास
बदल जाते नाम
पर होते तो इंसान
फिर अंतर क्या
जो मैं हिंदू
तू मुसलमान
या तू हिंदू
मैं मुसलमान ।

मजहब अगर न होता

मज़हब अगर ना होता
इंसान सुख से सोता
इंसानियत ना मरती
ना आत्मा ही डरती
मज़हब ने कितने मारे
हिंदू थे या मुसलमान
इंसान ही थे सारे ।

ये मुल्क भी ना बँटते
इंसान भी ना कटते
काफ़िर ना होता कोई
मुस्लिम ना कोई होता
मज़हब जो ये ना होता
इंसान सुख से सोता ।

भगवान या खुदा हो
ईसा हो या अल्लाह
हो क्या हैं अलग अलग ये?
एक नूर से हैं उपजे
उस में ही है समाना
इस बात को भुलाकर
पागल हुआ जमाना ।

हिंदू खुदा को पूजे
भगवान पूजे मुस्लिम
नफरत ना हो किसी में
क्या ऐसा होगा मुमकिन ?
जो हो नहीं ये सकता
नित दिन क्लेश होगा
मज़हब का नाम लेकर
दंगा ज़रूर होगा ।

मज़हब के ठेकेदारों
रास्ता कोई निकालो,
नफ़रत कहीं ना होए
मंदिर ना कोई तोड़े
मस्जिद ना फिर गिराए,

एक ऐसा घर बनाओ
जिस में कोई भी इंसान
मज़हब ना कुछ बताए

गर्व से कहो

पागल हुए हो–
गर्व से कहते हो
हम हिंदू,
खालसा
ईसाई, मुसलमान भी
सब कुछ कहते हो
तुम शान से
पर ये नहीं कहते
इंसान हूँ मैं
शान से।

इतराते हो
किस बात पर
पैदा हुए
क्या पूछकर
हिंदू के घर में
या किसी मुस्लिम के घर में।

संजोग से
हिंदू बने
मुस्लिम बने
फिर गर्व कैसा
क्या किया ऐसा
बताओ तुम जरा।

कुछ बनो
या ना बनो
इंसान बन जाओ
नेकी करो
सच को पूजो
दीन की खातिर लड़ो ।
परमात्मा
निज अंतर तलाशो
इंसान में
भगवान की
मूरत को घड लो
मज़हब
की खातिर
चाहे तुम लडो
या ना लडो ।
लेकिन लडो
पाप, अत्याचार से
हैवानियत से
भूख से
लड लो ।
फिर गर्व
तुम पर,
तुम नहीं
दुनिया करेगी ।

प्रहार

प्रहार ही करना है
तो आओ करें
रुढियों पर, अंधविश्वासों पर
विषमताओं पर,
सदियों से चले आ रहे
मिथ्या विश्वासों पर
अरे, एक दूसरे पर
सभ्यता के इस युग में
धर्म के नाम पर
आदिम जातियों के समान
प्रहार करने से
क्या तुम्हें मिल जाएगा
मार्ग धर्म का, समानता का ।

प्रचार ही करना है
तो आओ करें
नैतिकता के विचारों का
समानता का, स्वतंत्रता का
ना की करें प्रलाप
अनर्गल बकवासों का
मिथ्या विश्वासों का ।

विचार ही करना है
तो आओ करें
बढ़ती जनसंख्या का
प्रदूषण का, महामारी का
क्यों घोलते हो
मन में जहर
अश्लील, सांप्रदायिक व घिनौनी
बातों का ।

अनुकरण ही करना है
तो आओ करें
बुद्ध का, विवेकानंद का
महात्मा गांधी का
क्यों बनाते हो आदर्श मन में
दुष्टों, पाखंडियों, वासना के मारों का
हत्यारों का ।

मन तुम भी अजीब हो

मन तुम भी अजीब हो
मेरे होकर खो जाते हो
औरों के तुम हो जाते हो
दुख देते हो मुझ को तुम
लेकिन सुख भी दे जाते हो ।

कभी कभी होता है ऐसे
मन की बात समझ नहीं आती
कितनी भूली बिसरी यादें
बन कर स्वप्न रात में आतीं ।

कभी किसी पर मन आ जाए
तो हम को दिन रात जगाए
अपना होकर गैर को चाहे
कैसा पागलपन दिखलाए ।

मन की बातें मन ही जाने
जितने मन उतने अफ़साने
मन का भेद समझ ना आए
हर पल कितने रूप दिखाए ।

मन में राम, मन ही में रावण
मन ही भादों, मन ही सावन
मन के कितने रूप बतायें
मन के बस में, हैं सब ही जन ।

मेरी जीवन डायरी

एक डायरी
पन्ने पुराने से,
मेरे बीते साल
जिनमें बंद हैं,
कितने सुख हैं
कितने दुख हैं,
प्यार हैं
रुसवाइयां हैं,
भीड़ हैं
तनहाईयाँ हैं,
शांति भी
लड़ाइयाँ हैं,
मेरे बीते पल
उन ही में
बंद हैं ।

मैं किसी पन्ने पर
बच्चा हूँ,
बड़ा होने लगा हूँ
मैं किसी पेज पर,
रो रहा हूँ
मैं कभी,
हंस रहा हूँ
मैं किसी पेज पर,
लिख रहा था

कुछ बातें
कभी मैं फर्श पर,
और कभी
घर की पुरानी मेज पर ।

सब से पुरानी डायरीं
जो ढल गयी है,
लग रही बूढ़ी,
कुछ जगह से
गल गयी है,
उस में है बचपन मेरा ।

डायरी
जो कुछ पुरानी सी
दिखाई दे रही है,
उस में जवानी है,
उस में समाई
प्रेम की
कितनी कहानी है ।

सब से युवा
जो दिख रही है,
वो मेरा बुढ़ापा
ढो रही है,
लग रही ताज़ा
नव नवेली सी,
वो ही
मेरे बीते समय
की याद करके
रो रही है ।

अब हरेक पन्ना
डर रहा है,
कौन सा हो आख़िरी
पन्ना मेरी इस जिंदगी का,
ये सोच कर के
मुझ से पहले
मर रहा है,
सोचता हूँ
ऐसा कुछ लिख दूँ
मैं अपना आखिरी पन्ना
अमर कर दूँ ।

कौन दिशा से आए हो

कौन दिशा से
आए हो,
कौन दिशा को
जाना है,
कितने दिन को
आए हो,
जाकर फिर कब
आना है,
क्या कुछ लेकर
आए हो,
क्या कुछ लेकर
जाना है ।

कौन
तुम्हारे संबंधी,
किन जन्मों का
नाता है,
काहे
मोह किया सबसे,
साथ कोई क्या
जाता है ।

क्या ऐसे ही आए थे,
जैसे
तुम अब दिखते हो,
चंदा सा
चेहरा लाए,
कजरारे
नयना लाए,
देवदूत सा बदन मिला,
पर तुमने
क्या हाल किया ।

कितने महल बनाओगे
क्या सब में
रह पाओगे
कितनी ज़मीं खरीदोगे,
दो गज जगह ही पाओगे ।

घर, बेटा
पत्नी, नाती,
संग, सखा
मितवा, साथी,
सब पर बहुत भरोसा है
साथ कोई
क्या जाएगा,
क्या ऐसा भी
सोचा है ।

जिस कारण से
आए हो,
क्या ऐसा भी
सोचा है,
जिस कारण से
जन्म लिया,
उसको क्यों
बिसराए हो ।

इत उत क्यों
भागे फिरते
इस की, उस की
क्यों करते
सारा जन्म अकारथ हो
ऐसी करनी
क्यों करते ।

कुछ तो ऐसा
कर जाओ
नाम अमर
करते जाओ
जीवन के चप्पे चप्पे
भेंट नज़र
करते जाओ ।

सुख दुख

सुख क्या है
दुख क्या है
मन की अवस्था है
सुख सोचा तो
सुख है
दुख सोचा तो
दुख है ।

कभी हंसता है
कभी रोता है
खुशी से नाचता
ना फूला समाता है
नगाड़े ढोल बजवा कर
बड़े उत्सव मनाता है
सजी घोड़ी पे चढ़ता है
दुल्हनिया घर को लाता है ।

कभी छाती उदासी है
घटा भी गम की छाती है
कभी दौलत निकलती है
कभी शोहरत फिसलती है
कभी इज़्ज़त नहीं रहती
तबाही साथ चलती है
ना साथी साथ देते हैं
सभी बच कर निकलते हैं ।

बहाने लाख होते हैं
कभी हँसने के, रोने के
समंदर आँसुओं से भर
खुदी को खुद डुबाने के ।

जो सुख हो तो
ना पागल हो
जो दुख हो तो
दुखी ना हो
समन्वय सुख से, दुख से कर
रजा में उस की राज़ी हो
प्रभु की बंदगी को कर
ना सुख होगा, ना दुख होगा
ख़त्म सारा भ्रम होगा
ख़त्म सारा भ्रम होगा ।

लोग ही लोग

सुंदर लोग
काले लोग,
धूर्त लोग
मतवाले लोग,
पावन लोग
लांछित लोग,
मूरख लोग
ज्ञानी लोग,
भोग, रोगसे
लिपटे लोग,
योगी लोग
तपस्वी लोग ।

दुर्बल लोग
बलशाली लोग
भोले लोग
विषैले लोग
शोषक लोग
पीड़ित लोग,
सूफ़ी लोग,
नशेड़ी लोग,
प्रेमी लोग,
उखड़े लोग,
चतुर लोग,
अनाड़ी लोग,
पढ़ाकू लोग,
खिलाड़ी लोग ।

भंजक लोग
पुजारी लोग,
निंदक लोग,
बलिहारी लोग,
डाकू लोग,
सिपाही लोग,
साधारण लोग
अधिकारी लोग,
ग्राहक लोग,
व्यापारी लोग,
रोते लोग
हंसते लोग
चुप से लोग
बकते लोग ।

इधर भी लोग
उधर भी लोग
कहाँ से आए
इतने लोग,
कहाँ को जाएँ
इतने लोग,
जहाँ भी देखें
लोग ही लोग
कौन बनाता
ये सब लोग
कौन मिटाता
ये सब लोग ।

सब तरफ लोग, लंबे, नाटे, पतले, मोटे, गोरे, काले । कौन बनाता है, इन सब लोगों को ।

हरि ही

ना मैं जिऊँ,
ना ही मर पाऊँ
ना मैं पिऊँ
ना ही मैं खाऊँ
हरि ही जिए
हरि ही मर जाए
हरि ही पिए,
हरि ही खा जाए ।

ना मैं
गर्भ योनि में पड़ा
ना मैं
बालक, ना ही मैं बड़ा
हरि ही
गर्भ, माह नौ लटका
हरि ही
सखा सखि संग भटका ।

ना मैं किया
ना ही मैं कर्ता
ना मैं लिखा,
ना ही मैं पढ़ता
हरि ही करें,
हरि ही फल पाए
हरि ही पढ़े
हरि ही लिख जाए ।

ना मैं करन
करावन हारा
ना मैं जीता,
ना मैं हारा
हरि ही
सर्व कला का कर्ता
हरि ही
कर्म भोग का भर्ता ।

ना मैं
पाप पुण्य का भागी
ना मैं दास,
ना ही मैं बागी
हरि ही
बुरा भला सब करे
हरि ही
निडर,
हरि ही डरे ।

ऐसे मत मर जाना

ऐसे मत मर जाना
कुछ कर जाना
जीवन के चप्पे चप्पे को
पद चिन्हों की भेंट
नज़र कर जाना ।

सोना, जगना
खाना, पीना
मरना, जीना
सब करते हैं
जो तुमने किया,
तो क्या इतराना ।

सुबह उठे, शाम तक भागे
रात सोए, सुबह को जागे
दिवस मास चले आगे आगे
इसी तरह ये जीवन भागे
अभी तलक क्यों तुम ना जागे
ऐसे ही मर जाओगे क्या
ना नाम कोई ले आगे ।

जब तक रोशन रहे चाँदनी
जब तक सूरज रहे रोशनी
नाम तुम्हारा रहे जगत में
ऐसा कुछ कर जाना
ऐसे मत मर जाना ।

हम क्या हैं

हम क्या हैं
अस्थि और माँस,
जिस में चलती
हर पल सांस,
हृदय धड़कता है
दिन रैन,
पलक झपकते हैं
दो नैन ।

मनवा सोचे बारंबार
जीवन का अद्भुत व्यवहार,
दो हाथों से
करते काम,
पैर चलते हैं
सुबह शाम ।

हृदय स्थल में
बसते प्राण,
ध्वनि को सुनते हैं
दो कान,
जिव्हा से
वाणी व्यवहार,
भाव, कामना
प्रेम, विचार,
इन सबका
मनवा आधार ।

कैसा अद्भुत
मानव यंत्र,
अंधकूप होता निर्माण,
नौ माहों तक
चलता काम ।

कौन बनाया
मानव यंत्र,
जिस में फूंका
जीवन मंत्र,
सब अचरज का कारोबार,
कौन रचयिता
कौन कुम्हार,
सदियों से सब
करें विचार ।

मेरे भीतर

मरना क्या है
जीना क्या है
मिलना और
बिछड़ना क्या है,
आना क्या है
जाना क्या है
खोना क्या है
पाना क्या है
नाम जपन से
क्या होता है
हर सिमरन से
क्या होता है ।

मेरा मन
बिलकुल अज्ञानी
जिसने कही
उसी की मानी
अब थक गया
मैं इन बातों से
सोया नहीं
कई रातों से
किस विधि से
सब भ्रम
मिट जाएँ
ना मैं रहूं
ना मेरी
मैं रह जाए ।

मेरे भीतर
राम रमय्या,
मेरे भीतर
कृष्ण कन्हैया,
मेरे भीतर
मथुरा काशी,
मेरे भीतर
घट घट वासी,
फिर काहे
मैं वन वन जाऊँ
तीरथ तीरथ
ढोक लगाऊँ
मीत मेरा
मुझ ही में वासा,
काहे फिर मैं
इत उत जासा ।

प्राण मेरे

प्राण मेरे
तुम मेरे हर अंश में
समाए हो कभी से,
जब से मेरे
चैतन्य ने खोली थी आँखें ।
हर दिशा में
है तुम्हारी लालिमा ही ।
मेरे अंतर में
बसे हो प्रेम बनकर,
आँख का काजल है
तुम्हारी कालिमा ही ।

आदि से आदिम पुरुष में
तुम ही समाए थे,
युग युगों से
नर नारी के
संसर्ग भी
तुम ने कराए थे ।
प्राण मेरे
गर्भ बनकर
मेरे संग संग
तुम ही रहे थे ।
बालपन में
कृष्ण संग
माखन चुराए थे ।

तुम ही
बनकर वासना
यौवन सुख सजाए थे ।
प्राण मेरे
शैथिल्य होती देह में
तुम ही रहे थे ।
काँपते हाथों में
तुम्हीं थे ।
जर्जरित काया में
थी तुम्हारी ही
पिघलती काली छाया ।।
मौत आने पर
मेरे संग तुम गये थे
प्राण मेरे ।

प्राण मेरे ।
कितनी देहों में
रहे तुम साथ मेरे ।
मेरे सब सुख दुख
सहे तुम ने ।
हर व्यथा को
पी गये चुपचाप तुम
प्राण मेरे ।

प्राण मेरे
प्रणय के पल
साक्षी तुम थे,
अंतस में बहे थे
भाव बनकर,
प्राण मेरे ।

एक केवल तुम
रहे थे साथ मेरे,
घिर गये थे
चहुँ ओर जब
काले अंधेरे ।
प्राण मेरे ।

नींद में तुम
स्वपन बन
सब लोक घूमे थे,
दिन दोपहरी
बन कर के प्रहरी
तुम ही तो मेरे साथ थे,
प्रिय प्राण मेरे ।

हैरानी

हैरान हूँ मैं देख कर
कुदरत के खेल को,
कहाँ से आ रहे हैं सब,
कहाँ को जा रहे हैं सब ।
वो जाने कौन है,
जिस की है सारी खुदाई ये,
क्या जाने सोच कर उसने,
खुदाई ये बनाई है ।

कहाँ रहता है वो मलिक
नजर वो क्यों नहीं आता,
सितारे, चाँद, सूरज, धरती पर
उस की रहनुमाई है ।
हरेक जर्रे में बसता
दिखाई क्यों नहीं देता,
हरेक को देखता है वो,
नजर से रहता क्यों ओझल ।

कितने रूप, कितने चेहरे
हर तरफ भीड़, हम अकेले
किसी भी रोज कोई,
बिन कहे चला जाता है
कितनी आवाज़ भी दो,
वापिस वो नहीं आता है ।
जिस जगह जाता है,

कुछ ले के नहीं जाता है
ऐसी दुनिया में तो अब,
रहने से डर लगता है,
भोर का देखा है सूरज
शाम का पता क्या है ।

आज सब मिल के
खड़े हो जाओ,
आज सब मिल के
ये कसम खाओ,
एक दिन छोडो सभी काम
वहाँ सब मिल के चलो,
जहाँ से जाके
वापिस ना कोई आता है,
पता करे कि है कौन
जो बुलाता है ।

कहो सभी उस से
कि ये माजरा क्या है,
कहाँ ले जाता है सबको
और क्यों ले जाता है ।

पीड

धरती के अंतर में
कितनी पीड छुपी है,
ना जाने किस तरह
धरा की आह रुकी है ।

जित देखो,
उत दुख ही दुख
सुख कहाँ छिपा है,
इत देखो, उत देखो
जाने कहाँ रुका है ।

मैं समझी थी, मैं दुखी
सारी दुनिया है सुखी,
थी मैं कितनी बावरी
सब पर दुख की छाँव री ।

कोई धन को बावरा
कोई तन से है मरा,
किसी को मन का दुख लगा
अपनों से कोई है जुदा ।

दुखिया सब संसार है
गम से सारोबार है,
बाहर से झूठी हँसी
अंतर दुख भंडार है ।

सुख दुख मायाजाल है
जग सारा कंगाल है,
शरण राम की ले मना
दुख भंजन, सुखकार है ।

कहाँ गए

कहाँ गये वो
कल तक थे जो
साथ हमारे,
छोड़ गये क्यों
साथ हमारे ।

बचपन से यौवन तक
पकड़े हाथ हमारे
दिए सहारे,
छोड़ गये क्यों
बीच
सफ़र में,
मीत हमारे, सखा हमारे ।

जिन चेहरों को
हम तकते थे
सांझ सकारे,
नयन हमारे
देख सके ना
उन चेहरों को
बीत गये दिन
कितने सारे ।

दिन बीते
दिन पर दिन बीते
तुम बिन सब दिन

रीते रीते,
आई होली, गयी दिवाली
अपना अंगना
खाली खाली ।

कहाँ गये तुम
ना आने को,
नयन हमारे
रो रो हारे,
मीत हमारे, सखा हमारे,
राह तकत हैं
सांझ सकारे ।

जीते क्यों हैं
मरते क्यों हैं
सब मरने से
डरते क्यों हैं,
मिलते और बिछड़ते क्यों हैं
बनते और बिगड़ते क्यों हैं ।

इस जीवन का
मतलब क्या है
सब कुछ क्यों
बेमतलब सा है
कौन खुदा है
कौन विधाता
सब सृष्टि को
कौन बनाता ।

मैं ही मैं

जल में, थल में
काल में, पल में
धरती में, समुद्र में
नर्क में, स्वर्ग में
हिंद में, अरब में
राग में, मल्हार में
तोप में, तलवार में
पूजा, में नमाज़ में
ध्यान में, सहवास में
मैं ही मैं, बस मैं ही मैं ।

सागर में, गागर में
आकाश में, भवसागर में
अर्थ में, व्यर्थ में
स्वर्ग में, नर्क में
हँसी में, रुदन में
बेड़ी में, आभूषण में
सुगंध में, दुर्गंध में
पतझड़ में, बसंत में
मैं ही मैं, बस मैं ही मैं ।

राख में, खाक में
दूर में, पास में
चोर में, संत में
पतझड़ में, बसंत में

रोग में, भोग में
सत्य में, ढोंग में
प्यार में, प्रहार में
विचार में, विकार में
मैं ही मैं, बस मैं ही मैं ।

चींटी में, हाथी में
शत्रु में, साथी में
माता में, पिता में
सेज में, चिता में
रोग में, सोग में
भूख में, भोज में
जेल में, रेल में
मेले में, ठेले में
घर में, बाज़ार में
पैदल में, कार में
मैं ही मैं, बस मैं ही मैं ।
उदय में, अस्त में

जीत में, पस्त में
खाली में, व्यस्त में
निर्मित में, ध्वस्त में
चुप में, वाचाल में
आग में, भूचाल में
दिवस में, रात्रि में
युद्ध में, शांति में
हवन में, होम में
पाताल में, व्योम में
मैं ही मैं, बस मैं ही मैं ।

प्रभु

बहुत जतन कर, प्रभु ध्याया,
फिर भी हरि का, भेद ना पाया,
सहज सहेजा, जो निज मन को,
मन में ही पाया, प्रियतम को ।

मृग बेचैन बन बन धाया
कस्तूरी का भेद ना पाया,
अंतर घाट अमृत तालाबा,
बाहर भटके, भागा भागा ।

मूल धरम का, समझ ना पाया
कर्म कांड का ढेर लगाया
घट घट प्रभ को देख ना पाया
मंदिर मंदिर, ढोक लगाया ।

तर्क तर्क कर जीता हारा,
धर्म ग्रंथ पढ़ता दिन सारा,
भेद धर्म का समझ ना पाया,
मूढ़ मति क्यों जन्म गवाया ।

मुण्ड मुंडा कर करे तपस्या,
केश बढ़ा कोई बन गया शिष्य,
व्रत उपवास करे दिन राता,
जन्म अकारथ कर दिया सारा ।

राम नाम का मर्म ना जाना
घट घट बसे, राम तोहि माना
प्रीतम मेरा, प्राण आधारा
सांस सांस सिमरे दिन सारा ।

दादी

बचपन में
दादी के पास
मैं सोता था,
कभी दूर
दादी से होता
रात अकेला
मैं रोता था,
आँसुओं से
तकिया भिगोता था ।

रात में
दादी
मुझे किस्से सुनाती थी,
भूली बिसरी
बातें बताती थी
उस की बातें
थी मेरी लोरी,
सुनते सुनते
था मैं सो जाता,
नींद की दुनिया में
खो जाता ।

एक दिन
जो बात ना होती,
दादी
आकर पूछती मुझ से,
ठीक तो है
आज बोला ही नहीं मुझ से,
तेरी आवाज़ बिन सुन
रह नहीं पाती
मेरे बच्चे
तू मुझ से दूर हो
मैं सह नहीं पाती ।

एक दिन
दादी
अकेले सो गयी,
फिर नहीं जागी
कहीं पर खो गयी ।

तब से अब तक
हो गए बरसों,
मेरी दुनिया
बहुत बदली,
मेरा एक घर बना
प्यारी सी पत्नी मिली
फूल से बच्चे हुए
मैं व्यस्त
इतना हो गया,
दूसरी दुनिया में
जैसे खो गया ।

अचानक
आज मुझ को याद आई
बहुत दिन के बाद
दादी,
आज फिर
मैं रो रहा हूँ,
नयन जल से
आज फिर
तकिया भिगो रहा हूँ ।

सब एक से हैं

सब
एकस से हैं
खावत हैं
पीवत हैं
जागत हैं
सोवत हैं
गावत हैं
रोवत हैं ।

सब
चलती छाया से
सब
ठगनी माया से
सब
दो पल पाहुन से
सब
आवन जावन से ।

सब ही
पैदा होवत
सब ही
पावत खोवत
सब ही
दुःख में रोवत
सब ही
माया से मोहत ।

सब ही
माया भोगन
सब ही
रोगा रोगण
सब ही
पल पल विनसे
सब ही
मरते हैं छिन से ।

सब ही
तन सुख से चिपटे
सब ही
लोलुपता लिपटे
सब ही
कपटी और झूठे
सब ही
सच से हैं रूठे ।

सब
एकस से हैं ।

बचपन

जाने कहाँ गये वो दिन
पिता का गुस्सा माँ का प्यार,
दादी का वो लाड़ दुलार,
दोस्त यार, बचपन के खेल,
कभी लड़ाई, कभी था मेल,
जाने कहाँ......

घर, बगिया, मेहंदी का पेड़
आँगन में पत्तों का ढेर,
सावन में पेड़ों पर झूले,
ये सब बातें कैसे भूलें,
जाने कहाँ.......

राखी पर बहना का प्यार
मेघा रिमझिम, ठंडी बयार,
गली, आँगन में सोते लोग,
मीलों तक फैले वो खेत,
पनघट पर पानी की धार,
गरम अंगीठी, धुआँ सफेद,
जाने कहाँ....

चाचा, चाची, रिश्तेदार
कितना सब करते थे प्यार,
बचपन जाने कहाँ छुपा,
ऐसा गया, ना कभी मिला,

कोई तो बचपन ढूँढ के ला,
मुँह माँगे पैसे ले जा,
जब से बचपन चला गया,
मेरा मन एक दिन ना लगा,
जाने कहाँ.....

क्या करूँ

क्या करूँ
सार्थक हो जाए
ये जीवन,
क्या करूँ
हर घड़ी हो जाए
ये पावन,
भ्रमित मन का
दूर भ्रम हो,
क्या करूँ
शुष्क मन की धरा
नम हो ।

क्या करूँ
खुद को खुद से
लाज ना हो,
क्या करूँ
मन हर घड़ी
बेताब ना हो,
क्या करूँ
जो काम चाहूँ
वो करूँ मैं,
क्या करूँ
हो काम पूरे
जब मरूँ मैं ।

क्या करूँ
मुझ में रहे
विश्वास मेरा,
क्या करूँ
ना हो कभी
उपहास मेरा,
क्या करूँ
दौर्बल्य मन का
ना डराए,
क्या करूँ
मन, वासना ना
डूब जाए ।

क्या करूँ
इतिहास में
अमरत्व पाऊँ,
क्या करूँ
विश्वास जन जन का
मैं पाऊँ,
क्या करूँ
गत कर्म फल से
मुक्ति पाऊँ ।

मम अंतर

मम अंतर
बरसात झमाझम
मम अंतर
बूंदों का नर्तन
मम अंतर
बिजली का गर्जन
मम अंतर
सावन का मौसम ।

मम अंतर
गर्मी की धूप
मम अंतर
दोपहरी की लू
मम अंतर
आंधी तूफान
मम अंतर
सुबह और शाम ।

मम अंतर
लहरें उत्तंग
मम अंतर
यमुना और गंग
मम अंतर
धरती आकाश
मम अंतर
धवल आकाश ।

मम अंतर
नभ और पाताल
मम अंतर
ब्रह्माण्ड विशाल
मम अंतर
सूरज और चाँद
मम अंतर
विस्तृत आसमान ।

गगन मुझ में, चमन मुझ में
मुझ में धरा – आकाश है
अंधकार मुझ में ही है
मुझ में ही प्रकाश है ।

तू ही तो है

जो जागत है
जो सोवत हैं
जो पावत है
जो खोवत है,
जो धावत है
जो आवत है
वो तू ही तो है
तू वही तो है ।

जो जानत है
जो मानत है,
जो सूरत है
जो मूरत है,
जो बालक है
जो पालक है,
वो तू ही तो है
तू वही तो है ।

जो मोचक है
जो रोचक है,
जो हर्षित है
जो व्यथित है,
जो माधव है
जो राघव है,
वो तू ही तो है
तू वही तो है ।

एक दिन

एक दिन पत्ता बन कर उड़ जाएँगे
नहीं वृक्ष से कभी जुड़ पाएँगे
एक दिन बन के बूँद बह जाएँगे
सागर में जा मिले, नदी में ना आएँगे
एक दिन सपना बन ही दिख पाएँगे
खुली आँख से देखोगे तो नजर नहीं आएँगे ।

एक दिन बन शून्य बिखर जाएँगे
हम ना होंगे कहीं अलग से जो ढूंढोगे
किसी अंक के साथ तालिका में पाओगे
एक दिन तुम्हें हम याद बहुत आएँगे
आँख बंद कर देखोगे तो झट से दिख जाएँगे ।

एक दिन फोटो बन टंग जाएँगे
आने वाली नस्लों के हम पूर्वज बन जाएँगे
होंगे हम भी वहीं कहीं पर
खुद को पर पहचान नहीं पाएँगे ।

एक दिन अक्षर बन लिख जाएँगे
कविता बन कर पन्नों पर छप जाएँगे
शब्द जो हम ने आज लिखे हैं
सदियों बाद किसी पुस्तक में मिल पाएँगे ।

एक दिन अंधियारा बन छा जाएँगे
खुली आँख को नजर ना आ पाएँगे
दीपक की लौ में लौ बन जल जाएँगे
अग्नि का सह ताप धुआँ बन उड़ जाएँगे
बादल बन फिर उसी अगन पर बरस जाएँगे
बुझा अगन हो मगन भाप बन उड़ जाएँगे ।

एक दिन कहीं ना मिल पाएँगे
दूर किसी घर में जाकर के बस जाएँगे
नव शरीर, नव जीवन हम पा जाएँगे
जन्म मरण के चक्र का हिस्सा बन जाएँगे
कर्म भोग पिछले जन्मों के निबटाएँगे ।

रे मन, जाग रे जाग

रे मन
जाग रे, जाग रे, जाग
भोर भई
अबहूँ तक सोया
सोए रहे तेरे भाग
रे मन
जाग रे, जाग रे, जाग

सूरज जागा, पंछी जागे
जलचर, धरा के जन्तु जागे
तू मूर्ख
अबहूँ तक सोया
गठरी में लागी आग
रे मन
जाग रे, जाग रे, जाग

अनहद नाद
जगत में बाजा
जागी प्रजा, जाग गया राजा
चादर ओढ़
मूढ़ तू सोया
सुनी न, अनहद नाद
रे मन
जाग रे, जाग रे, जाग ।

राम रचा जो, सो ही होई

ये भी कर लूँ, वो भी कर लूँ
घर अपना, पैसे से भर लूँ
ये भी पा लूँ, वो भी पा लूँ
जीवन के हर गीत को गा लूँ
इच्छाओं का अंत न कोई
राम रचा जो, सो ही होई

ऐसा होए, वैसा होए
जाने कैसा-कैसा होए
मिले सभी कुछ, कुछ न खोए
भाग्य जगा हो, कभी न सोए
इच्छाओं का अंत न कोई
राम रचा जो, सो ही होई ।

अतुलित बल हो, अगिनत धन हो
खुशियों से, परिपूरित मन हो,
महका बगिया का कण-कण हो
जीवन इक सुंदर उपवन हो
इच्छाओं का अंत न कोई
राम रचा जो, सो ही होई ।

मन मेरे

मन मेरे, मन मेरे
अब रह, संग मेरे
जिन-जिन के तू
मारे फेरे
न तू उनका
न वो, तेरे ।

मन मेरे, मन मेरे
अब रह, संग मेरे ।

मेरे मन, राजीव अब जागो
उठो, दूर, माया से भागो
भोर गई, अब चढ़ी दोपहरिया
माया, महाठगिनी, कंजरिया ।

मन मेरे, मन मेरे
अब रह, संग मेरे ।

लेखनहार

जिस ने तेरी कथा लिखी है
जिस ने मेरी कथा लिखी है
वह लेखनहार बड़ा होगा ।

किसी पृष्ठ पर
बचपन लिखा
किसी पृष्ठ पर यौवन
किसी पृष्ठ पर लिखा बुढ़ापा
किसी पृष्ठ पर मुर्दन ।

जो भी लिखा
वैसा ही होगा
तू क्यों भया उदासा
किसी समय
सुख मदिरा सेवन
किसी समय तू प्यासा ।

लेखनहारा
लिख-लिख जाए
कलम न उसकी टूटे
कभी लिखे
प्रियतम से मिलना
कभी प्रियतम रूठे ।

कवन, कलम, कवन दवात
कवन हाथ, जो लेखे भाग
कवन लिखारी, कवन किताब
कवन देश, वह करे निवास ।